संवत्सरी महापर्व

'संवत्सरी तपस्या, संयम, मैत्री और अहिंसा का पर्व है'

– आचार्यश्री महाश्रमण

पर्वाधिराज संवत्सरी महापर्व पर आज प्रात: 7.30 से सायं 4 बजे तक आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में प्रवचन कार्यक्रम आयोजित हुआ। जैन श्रावक समाज में हजारों पौषध, हजारों उपवास, हजारों-हजार सामायिक किये गयें। संवत्सरी के दिन साधुसमाज का प्रत्येक सदस्यों ने चौविहार उपवास रखा।

आचार्यश्री महाश्रमण ने उपस्थि विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए भगवान महावीर अध्यात्म से लेकर उनके दीक्षा प्रसंगों का उल्लेख करते हुए कहा कि संवत्सरी महापर्व अध्यात्म से परिपूर्ण पर्व है जो किसी व्यक्ति विशेष से जुड़ा हुआ दिन नहीं है, यह पर्व तपस्या, संयम, मैत्री, अहिंसा के साथ जुड़ा हुआ है। और संवत्सरी महापर्व जैन धर्म का शिरोमणी पर्व है।

मुनि जयंतन कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि संवत्सरी के दूसरे दिन (13 सितज़्बर) प्रात: सूर्योदय के समय ही क्षमा याचना का कार्यक्रम आयोजित होगा। इस दिन वर्षभर में हुई भूलों को भूलाकर क्षमा का आदान-प्रदान किया जाता है। आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित होने वाला यह कार्यक्रम विशेष दृश्य होगा, आचार्य महाश्रमण स्वयं सभी से खमत-खामणा करेंगे। इसके साथ ही साधु-साध्वी एवं श्रावक-श्राविकाओं के द्वारा आपस में खमत खामणा किये जायेंगे।